राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

ईश्वरीय यज्ञ सेवा का महत्व...

ईश्वरीय यज्ञ सेवा से बनता श्रेष्ठ भाग्य

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि मान लीजिए पानी की कमी पड़ रही है तो हमने कम पानी से काम चलाया। बचे हुए पानी से आने वाले को सुख मिला ये हमारी बचत हो गई है। यह बहुत बड़ा पुण्य जमा होगा। कहीं कोई चीज़ वेस्ट हो रही है भोजन में, सब्जियों में हमने उस वेस्टेज को ठीक किया, वो हमारा धन जमा हो जायेगा। तो हम तन से भी खूब सेवा करें, मन से भी खूब सेवा करें, धन भी जितना जो लगा सकते हैं वो इस महान कार्य में लगायें। अब आगे पढ़ें...

कई सोचते हैं हमारे पास तो कम पैसा है। बाबा ने कहा गरीब का एक रूपया और साहूकार के सौ बराबर माने जायेंगे। कहीं कहा साहूकार के हज़ार एक रुपये के बराबर होगा? यहां भावना देखी जाती है। भगवान अगर चाहे तो धन की बरसात नहीं कर सकता क्या? लेकिन वो गरीबों की पाई-पाई से इस यज्ञ को सफल करता है। ताकि उन गरीबों का श्रेष्ठ भाग्य बन सके। अगर वो भावनाओं से अपना धन सेवा में अर्पित करते हैं तो बहुत बड़ा भाग्य बनता है। यज्ञ सेवाओं को सफल करना, यज्ञ सेवाओं को निर्विघ्न रूप से चलाना, यज्ञ में अगर कोई विघ्न डाल रहा है उन विघ्नों को समाप्त कराना, यज्ञ में श्रेष्ठ पुरूषार्थ के वायब्रेशन्स फैलाना ये इस यज्ञ को सफल करने का सबसे बड़ा आधार है। कई लोग मान लो सवेरे नहीं उठते, फोन पर रहते हैं तो इसे यज्ञ कमज़ोर होगा, उनका भाग्य भी नष्ट होगा। हालांकि यज्ञ कभी कमज़ोर होता नहीं। क्योंकि यज्ञ को स्तम्भ बनाने वाली बहुत आत्मायें यहां हैं। उनके योग के वायब्रेशन्स, उनकी प्युरिटी इस यज्ञ को बहुत स्ट्रॉन्ग स्तम्भ की तरह बनाए हुए है। लेकिन हमारा ये कर्त्तव्य है हम इस यज्ञ में सुख-शांति, प्रेम-खुशी का माहौल बनाए रखें। समस्या क्रिएट न करें और अगर कोई क्रिएट करता है तो उसे सहज भाव से समाप्त करें। सबको अपनी-अपनी सेवाएं हैं, अपनी-अपनी सेवाओं को इस तरह पूर्ण करना कि कोई कम्प्लेन्ट न हो, कोई शिकायत न करे। ये है सेवाओं की सम्पूर्ण सफलता। और किसी की सेवाओं में बार-बार शिकायत होती रहे, बार-बार विघ्न पड़ता रहे, लोग संतुष्ट न हो तो उस सेवा का फल भी बहुत कम हो जाता है। मन लगाकर हम सेवा करें, मन से बहुत अच्छे वायब्रेशन्स हम चारों ओर फैलायें। धन के बारे में हमने बहुत कुछ कह ही दिया है।

यज्ञ सेवाओं को सफल करना, यज्ञ सेवाओं को निर्विघ्न रूप से चलाना, यज्ञ में अगर कोई विघ्न डाल रहा है उन विघ्नों को समाप्त कराना, यज्ञ में श्रेष्ठ पुरूषार्थ के वायब्रेशन्स फैलाना ये इस यज्ञ को सफल करने का सबसे बड़ा आधार है।

कई लोग सोचते हैं कि हमारे पास तो वाचा की सेवा है ना तो और सेवा हम क्यों करें! हम तो वाचा में या मैनेजमेंट में बहुत ज़्यादा बिज़ी रहते हैं। हमारा तो पूरा समय इन सेवाओं में सफल हो रहा है। ठीक बात है, सेवाओं में पूरा समय, पूरा जीवन सफल हो रहा है लेकिन अगर श्रेष्ठ भाग्य को पाना है तो यज्ञ सेवा भी आवश्यक है। योग के द्वारा यज्ञ में वायब्रेशन्स फैलाना, यज्ञ के वातावरण को मोस्ट पॉवरफुल बनाना, टकराव से मुक्त रखना ये भी परम आवश्यक है। ये भी बहुत महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है। कई लोग केवल वाचा की सेवा में रहते हैं लेकिन मैंपन बहुत रहता है। मेरा ही नाम हो, मैं ही ये करूँ, मेरे बिना कोई न करे, मेरे से आगे कोई नहीं जाना चाहिए, सारे चांस मुझे ही मिलने चाहिए या मुझे ये चांस न मिले, मुझे कोई पूछता नहीं है, निराशा वाले संकल्प। इससे भी हमें कोई विशेष ज़्यादा फायदा नहीं होगा।

हम ध्यान दें, जो सेवा हमें मिली है उसको हम यदि सम्पूर्ण करते हैं, किसी को कोई चीज़ कहने की ज़रूरत न पड़े, उसमें यदि हम इकानामी करते हैं, उसके द्वारा सभी आत्मायें संतुष्ट हो जाएं तो ये उस सेवा की बहुत बड़ी सफलता है। किसी के पास कोई भी डिपार्टमेंट है और कोई चीज़ लेने चला गया तो चीज़ भी नहीं दी और डांट भी लगा दी। इससे यज्ञ के वातावरण में निगेटिविटी फैलती है।

तो आओ हम सभी यज्ञ वत्स इस यज्ञ को बहुत स्ट्रॉन्ग बनाएं, ऐसा पॉज़िटिव, पॉवरफुल और प्युअर वायब्रेशन्स यहां से फैलाएं कि सारे संसार में जो माया है, जो पाप बढ़ रहा है, जो हिंसक वृत्ति बढ़ रही है वो समाप्त हो जाए। सभी में आपस में प्रेम बढ़े, सभी एक-दूसरे को सम्मान दें। भारत की जो प्राचीन परम्पराएं बताई हैं, सभ्यताएं हैं उनकी पुनर्स्थापना हो जाए। तो ये हम यज्ञ निवासियों का बहुत बड़ा कर्त्तव्य है क्योंकि संसार हमें देखता है, हमें फॉलो करता है तो वो हमसे अच्छा-अच्छा ही सीखकर जाए। यही हमारी जीवन की और यज्ञ की सम्पूर्ण सफलता है।

बाणेर-पुणे(महा.)। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मुलाकात करने के पश्चात ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए डॉ. ब्र.कु. त्रिवेणी। साथ हैं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

शांतिवन-राज.। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् राजेन्द्र जे. शंकरपुरे,असीस्टेड अंडर द स्कीम ऑफ एग्री क्लिनिक एंड एग्री बिज़नेस सेंटर्स मिनिस्ट्री ऑफ एग्रीक्लचर,गवर्नमेंट ऑफ इंडिया को ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ओमशान्ति मीडिया के सम्पादक राजयोगी डॉ. ब्र.कु. गंगाधर।

सटाना-महा.। कर्मवीर आबासाहेब तथा ना.म. सोनवणे आर्ट्स, कॉमर्स और साइंस कॉलेज सटाना में निर्भय कन्या अभियान कार्यक्रम में आमंत्रित दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सोनू बहन, सालन ताई सोनोने महिला संचालिका मराठा विद्या प्रसारक समाज संस्था, उप प्राचार्या सेवाळे मैडम एवं स्वप्रबंधक सिद्धार्थ बोरसे।

हथबंद-तिल्दा(छ.ग.)। झरना देवी मानव सेवा संस्थान द्वारा गीता जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में गीता शास्त्र पर सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रियंका। मंचासीन हैं डॉ. दीनानाथ यादव,विभागाध्यक्ष,मैट्स यूनिवर्सिटी, डॉ. छवि नाथ समदर्शी,भगवत गीता में पीएचडी, इस्कॉन और गायत्री शक्ति पीठ के प्रतिनिधि तथा अन्य।

ऊपर से नीचे

1. एकव्रता बनने से ..... पर चलना बहुत सहज हो जाता है।(4)
2. बापदादा अचानक चार्ट मंगायेंगे, देखेंगे कि जिम्मेवारी का ..... पहना या हिलता रहा है।(2)
3. अपने ..... का दुःख, परेशानी आप देख सकते हो! दुःखी आत्माओं को अंचली दो।(4)
4. सरोवर, जलाशय, जलवान।(3)
7. भयभीत करना, डरना।(2)
8. रूहानी आत्मा इस लोक में रहते हुए भी ..... फरिश्ता दिखाई देगी।(4)
9. संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्कद्वारा ..... दो और ..... लो।(3)
10. एकव्रता बन पवित्रता की ..... द्वारा रूहानियत में रह मनसा सेवा करो।(3)
11. रूहानी बोल बोलने वाला ..... आत्मा बन जाता है।(4)
12. रूहानियत की शक्ति वाली आत्मा की ....., चेहरा फरिश्तों के समान डबल लाइट दिखाई देता है।(3)
17. आप मुक्ति दिलाने वाली आत्मायें मास्टर मुक्तिदाता कब इन आत्माओं को मुक्ति दिलायेंगे? क्या मन में ..... नहीं आता?(3)
18. अगर सच्ची दिल से पुण्य समझ करके सेवा करते हैं तो उसका प्रत्यक्ष फल है, उसको थकावट नहीं होगी, खुशी होगी। यह प्रत्यक्षफल पुण्य के ..... का अनुभव होता है।(2)

अव्यक्त मुरली 15-12-2001 (पहेली-12)2024 -25

11/25- पहेली का उत्तर

(अव्यक्त मुरली 25-11-2001)

ऊपर से नीचेः 1. साकार, 2. रथ, 3. अनुभव, 5. आर्डर, 6. प्यार, 9. पूज्य, 10. भय, 11. नाम, 12. विश्व, 13. मुक्ति, 14. समाधान, 15. यज्ञ, 17. सफलता, 18. गोल्डन, 20. शेरनी, 23. माया। बायें से दायेंः 1. सागर , 3. अकेला, 4. दुआ, 7. रवि 8. भरपूर, 12. विजय, 14. समय, 16.भक्ति 17. समस्या, 19. नशे, 21. काल, 22. ओल्ड, 25. नीम।

बायें से दायें

1. जब है ही ..... तो एक की मत से एकमती सद्गति सहज हो जाती है।(4)
3. ..... ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है।(4)
5. जितनी-जितनी ..... -वाणी-कर्म में पवित्रता होगी उतना ही रूहानियत दिखाई देगी।(2)
6. अभी वाणी के साथ मन्सा ..... की ज्यादा आवश्यकता है, यह मनसा सेवा हर एक नया, पुराना, महारथी, घोडेसवार, प्यादा सब कर सकते है।(2)
7. प्रकृति तीव्रगति से सफाया करने का इन्तजार कर रही है। तो हे फरिश्ते, अभी अपने ..... लाइट से इन्तजार को समाप्त करो।(3)
8. एक रूहानी बोल ..... आत्माओं के जीवन में आगे बढ़ने का आधार बन जाता है। (2)
10. डोरा, तागा, बटा हुआ सूत।(2)
13. बापदादा हर बच्चे की पवित्रता के ..... पर रूहानियत को देख रहे है।(3)
14. सरोज, पुष्कर, नलिन।(3)
15. पिता की माता, दादा की स्त्री।(2)
16. ..... जो पहले बारी आये हैं, वह हाथ उठाओ।(2)
19. रूहानी कर्म ..... स्वयं को भी कर्मयोगी स्थिति का अनुभव कराते है।(3)
20. जैसे लौकिक में कोई - कोई बच्चे की सूरत बाप समान होती है तो कहा जाता है कि इसमें बाप दिखाई देता है। ऐसे ब्रह्माचारी ब्राह्मण आत्मा के चेहरे में रूहानियत के आधार पर ब्रह्मा बाप ..... अनुभव हो।(3)
21. दिल्ली के इन्जीनियर्स आये हैं, उद्घाटन तो कर लिया ना! अच्छा किया। सभी ठीक हैं। थक तो नहीं गये हैं? नहीं, और ..... भी बनाने के लिए देवें, एवररेडी हैं?(3)